प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

'सुन्दर वर्तमान उज्जवल भविष्य का निर्माण करता है'

– आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 10 जून, 2010

आचार्यश्री महाश्रमण ने बौद्ध ग्रंथ धम्मपद और जैन धर्म के उत्तराध्ययन ग्रंथ के तुलनात्मक प्रवचन में कहा कि पाप करने वाला व्यक्ति इस जन्म में संताप प्राप्त करता है और अगले जन्म में भी संताप में रहता है। जो व्यक्ति धर्म की साधना करने वाला होता है वह यहां भी आनन्द से रहता है और मरने के बाद भी आनन्द प्राप्त करता है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने स्थानीय चौरड़िया प्रशाल स्थित प्रवचन पण्डाल में जन समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि जिस तरह से एक राहगीर साथ में भोजन पानी कुछ नहीं रखता है और उसे रास्ते में कुछ प्राप्त नहीं होता वह भुख-प्यास से पीडित हो जाता है इसी तरह जो व्यक्ति धर्म, पुण्य को साथ में नहीं रखता है तो वह दु:खी रहता है। दूसरी ओर जा राहगीर अपने साथ भोजन-पानी का बंदोबस्त साथ में रखता है उसे रास्ते में कठिनाई नहीं होती वह आराम से रास्ते को पार कर सकता है। धर्म, पुण्य को साथ लेकर चलता है वह व्यक्ति इस भव में आनन्द के साथ रहता है और अगले लोक में भी आनन्द पाता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि भविष्य को अच्छा बनाने के लिए वर्तमान को अच्छा बनाना चाहिए। वर्तमान को देखकर भविष्य पर चिंतन करना चाहिए। जो व्यक्ति आगे की बात सोचता है वह दूरदृष्टा होता है और वह निकट को भी सही कर लेता है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आत्मा की दृष्टि से देखा जाए तो आत्मा परमात्मा में जाती है, अगर कोई व्यक्ति आत्मा परमात्मा में विश्वास नहीं करता है और वह अच्छा कार्य करता है तो उसमें कोई नुकशान की बात नहीं होती है क्यांकि अगर परलोक है तो उसके अच्छ कर्म आगे काम आयेंगे अगर परलोक नहीं भी है तो उसमें कोई नुकशान की बात नहीं हो सकती। इसलिए मनुष्य को अच्छे कर्म की ओर ध्यान देना चाहिए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि जो रात्रियां बीत रही है वह वापिस नहीं आती, धर्म करने वाले व्यक्ति की रात्रियां अच्छी जाती है और अधर्म का काम करने वाले का समय खराब फल देने वाला हो जाता है। धर्म और अधर्म दोनों मनुष्य के सामने है, जब मूर्च्छा का आवरण होता है तो मनुष्य सही निर्णय नहीं कर पाता इसलिए ज्ञान के सम्मान कोई पवित्र वस्तु नहीं होती , अज्ञान क्रोध से भी बड़ा अभिषाप है क्योंकि ज्ञान के अभाव में व्यक्ति को विवेक नहीं होता अज्ञानी आदमी सही निर्णय नहीं कर सकता।

मनुष्य के पास शरीर और आत्मा दोनों है आत्मा आगे जाने वाली है और शरीर यहीं रहने वाला है इसलिए मोह को कम करने का अभ्यास करना चाहिए।

– शीतल बरड़िया

(मीडिया संयोजक)